पुराणों में वर्णित कुछ महत्त्वपूर्ण आख्यानों का परिचय प्रस्तुत है :-

### धार्मिक

(१) **मत्स्याख्यान** - यह आख्यान प्रजापति के मत्स्य रूप धारण करने से सम्बद्ध है। मत्स्य पुराण का आरम्भ तो इस आख्यान के उपब ंहण के लिए ही किया है। इसके अतिरिक्त इस आख्यान का उपब ंहण भागवत, अग्नि तथा गरुड़ पुराण में भी हुआ है। विद्वानों के अनुसार इस आख्यान का मूल शतपथ ब्राह्मण २।८।१।१ में है।

जलप्लावन के समय मत्स्य रूप प्रजापति ही मनु का संतरष्ष्व कराते हुए पुनः स ष्टि के लिए आवश्यक त़त्त्वों का संरक्षण करते हैं।

(२) **कूर्माख्यान** - यह आख्यान प्रजापति के कूर्म रूप धारण करने से सम्बद्ध है। यह आख्यान कूर्म पुराण के अतिरिक्त भागवत, अग्नि, गरुड, पद्म, ब्रह्म तथा विष्णुपुराण में उपलब्ध होता है। इस आख्यान में सभी पुराण कूर्म को भगवान् विष्णु का द्वितीय अवतार मान कर विस्त त व्याख्या करते हैं। इस आख्यान का संक्षिप्त रूप तैत्तिरीय आरण्यक १।२३।३, शतपथ ब्राह्मण ७।५।१।५, तथा जैमिनीय ब्राह्मण ३।२७२ में मिलता है।

(३) **वराहाख्यान** - यह आख्यान विष्णु के वराह अवतार से सम्बद्ध है। इस आख्यान का उपब ंहण विशेष रूप से भागवत तथा विष्णु पुराण में हुआ है। इस आख्यान का मूल ऋग्वेद ८।७७।१० के अतिरिक्त तैत्तिरीय संहिता तथा शतपथ ब्राह्मण को माना जाता है।

## लौकिक

(१) **पुरुरवा-उर्वशी आख्यान** - भागवत तथा विष्णु पुराण में इस आख्यान द्वारा पुरुरवा और उर्वशी की प्रणय कथा का विशुद्ध साहित्यिक रूप वर्णित है। विद्वज्जन इस आख्यान का मूल ऋग्वेद के पुरुरवा उर्वशी संवाद को मानते हैं।

(२) **हरिश्चन्द्र-शुनः शेप आख्यान** - इस आख्यान में राजा हरिश्चन्द्र उसके पुत्र रोहित और ऋषि पुत्र शुनः शेप की कथा का विस्तार से वर्णन उपलब्ध होता है। यह आख्यान भागवत, दैवी भागवत, ब्रह्म तथा मार्कण्डेय पुराण में विस्तारसे वण्रित है। मार्कण्डेय पुराण में इसका वर्णन अत्यन्त साहित्यिक तथा रोचक है। यह आख्यान मूलरूप से ऐतरेय ब्राह्मण में उपलब्ध होता है।

**नचिकेतोपाख्यान** - मूल रूप से कठोपनिषद् का नचिकेतोपाख्यान अद्वितीय अध्यात्म साहित्य का महत्त्वपूर्ण आख्यान है। यह आख्यान ऋषि वाजक्षवस, उनके पुत्र नचिकेता तथा राम की कथा से सम्बद्ध है। पुराण साहित्य में इस आख्यान का उपब ंहण विशेष रूप से वराह पुराण में मिलता है। वहाँ इस आख्यान में समयानुसारी परिवर्तन करके रोचकता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

पुराणों में उपरिनिर्दिष्ट धार्मिक और लौकिक आख्यानों से भिन्न प्रकार के आख्यान भी उपलब्ध होते हैं। आख्यानों के इस प्रकार को प्रतीक आख्यान कहा जा सकता है। इस कोटि में-इन्द्र-अहल्या, चन्द्रमा-तारा, विश्वरूप त्वष्टा तथा ब्रह्माऔर सरस्वती के आख्यान प्रमुख हैं। विद्वानों के अनुसार इन प्रतीकोपाख्यानों के माध्यम से पुराणकारों ने आध्यात्मिक और वैज्ञानिक रहस्यों को प्रकट किया है।

# पुराण में प्रतिपादित सर्ग (स ष्टि)

प्रतिसर्ग पुराणों के वर्ण्य विषय है। सर्ग को स ष्टि विद्या कहते हैं। पौराणिक स ष्टिक्रम पर सांख्य दर्शन में वर्णित स ष्टिक्रम का ही प्रभाव परिलक्षित होता है। पर, कई द ष्टियों से इसका अपना

प थक् अस्तित्व भी है। सांख्यीय स ष्टिविद्या निरीश्वर है, किन्तु पौराणिक स ष्टिविद्या में सेश्वर, तत्त्व का प्राधान्य है। सांख्य में प्रकृति और पुरुष के संसर्ग में ही स ष्टि का निर्माण होता है, जो अनादि और अनन्त माने गये हैं। 'विष्णुपुराण' ने स्पष्टतः इसे स्वीकार किया है कि विष्णु के रूप से ही प्रधान और पुरुष दो रूप होते हैं एवं विष्णु त तीय रूप-कलात्मक रूप-से ही यह स ष्टि के समय संयुक्त एवं प्रलय-काल में वियुक्त होते हैं।

**विष्णोः स्वरूपात्परतो हि ते द्वे,**
**रूपे प्रधानं पुरुषश्च विप्र।**
**तस्यैव ते न्येन ध ते वियुक्ते,**
**रूपान्तरं तद्द्विज कालसंज्ञम्।। -१।२४**

पुराणों में स ष्टि के नौ प्रकार कहे गये हैं। सर्ग के तीन प्रकार हैं-प्राकृत, वैकृत तथा प्राकृत-वैकृत सर्ग। प्रााकृत सर्ग तीन प्रकार का। वैकृत पाँच प्रकार का एवं प्राकृत-वैकृत एक प्रकार का होता है। प्राकृत सर्ग के तीन प्रकार हैं-ब्रह्म सर्ग, भूत सर्ग तथा वैकारिक सर्ग।

**ब्रह्म सर्ग** - महत् तत्त्व का सर्ग ही ब्रह्म सर्ग है। भूत सर्ग-पंच तन्मात्राओं की स ष्टि भूतसर्ग है। वैकारिक सर्ग-एकादश इन्द्रियविषयक स ष्टि वैकारिक सर्ग है। वैकृत सर्ग के पाँच प्रकार हैं-मुख्य सर्ग, तिर्यक् सर्ग, देवसर्ग, मानुष सर्ग तथा अनुग्रह सर्ग।

**मुख्य सर्ग** - जड़ स ष्टि को ही मुख्य सर्ग कहते हैं, जिसमें व क्ष, गुल्म, लता, त ण एवं वीरुध आते हैं। इसे मुख्य सर्ग इसलिए कहा जाता है कि प थ्वी पर चिर स्थायिता के विचार से पर्वतादि की ही प्रधानता है-मुख्य वै स्थावराः स्म ताः, विष्णु-पुराण, १।५।२१। स ष्टि के आदि में पूर्ववत् ब्रह्मा द्वारा स ष्टि का चिंतन करने के पश्चात् पुनः धारण करने पर जो स ष्टि हुई, उसे मुख्य सर्ग कहा गया।

**तिर्यक् सर्ग** - मुख्य स ष्टि को अनुपयुक्त समझकर जब ब्रह्मा ने उसे पुरुषार्थ के लिए अनुपयुक्त समझकर पुनः ध्यान किया तो तिर्यक् योनि के जीव उत्पन्न हुए। इस वर्ग में पशु-पक्षी आते हैं जो अज्ञानी, तमोमय एवं विवेक-रहित होते हैं। स्थावर के पश्चात् इनकी स ष्टि जंगम में हुई।

**देव सर्ग** - तिर्यक् स ष्टि से सन्तोष न पाकर ब्रह्मा ने देव सर्ग या परम पुरुषार्थ या मोक्ष के साधक की स ष्टि की। यह प्राणी ऊर्ध्व स्रोत एवं ऊर्ध्वलोक में निवास करने वाले हैं।

**मानुप सर्ग** - इस सर्ग में प्राणी प थ्वी पर निवास करने वाले एवं सत्त्व, रज, तम से युक्त होते हैं, इन्हें मनुष्य कहते हैं।

**अनुग्रह सर्ग** - समस्त प्राकृतिक सर्ग ही अनुग्रह सर्ग है।

**कौमार सर्ग** - कुछ आचार्यों के अनुसार यह स ष्टि देव, मनुष्य दोनों की है। स ष्टि क्रम में यह भी विचार किया गया है कि तमोगुण का अधिक्य होने से ब्रह्मा ने असुरों की स ष्टि की, जो उनकी जांघ से उत्पन्न हुए। तदनन्तर ब्रह्मा ने तामसी देह का परित्याग कर सात्विक शरीर का आश्रय ग्रहण करते हुए अपने मुख से सुरों को उत्पन्न किया तथा पुनः रजोदेह धारण कर रजोगुण प्रधान मनुष्यों का निर्माण किया। उन्होंने आंशिक सत्त्व देह से पितरों की स ष्टि की। उपर्युक्त बार प्राणिवर्गों का सम्बन्ध चार कालों में भी है-असुर का रात्रि से, सुर का दिन से, पितरों का संध्या से एवं मनुष्य का प्रातःकाल से। स ष्टि के अन्य तीन प्रकार भी माने गये हैं-ब्राह्मी स ष्टि, मानसी स ष्टि एवं रौद्री स ष्टि।

**ब्राह्मी स ष्टि** - भगवान् की प्रेरणा प्राप्त कर उनकी नाभि कमल पर बैठ कर ब्रह्मा ने उनमें अपने चित्त को लगाकर सौ वर्षो तक तप किया। उन्होंने देखा कि प्रलय कालीन प्रबल वायु के झकोरे से, जिस कमल से वे उत्पन्न हुए हैं और जिस पर बैठे हैं, वह कमल तथा जल

दोनों ही काँप रहे हैं। तपस्या तथा ह्रदय में प्रबल आत्म ज्ञान के कारण उनकी विज्ञान शक्ति प्रबल हो उठी। उन्होंने इसी शक्ति के द्वारा प्रबल वायु तथा विशाल जल-राशि का पान कर लिया। तदनन्तर उस आकाशव्यापी कमल को, जिस पर वे बैठे हुए थे, देख कर उन्होंने सोचा कि पूर्व कल्प में प्रकृति में लीन हुए लोकों का मैं इसी से स जन करूँगा। तब भगवान् द्वारा स ष्टि के कार्य में प्रवेश कर उसे एक को ही भूः, भुवः, स्वः, इन तीन भागों में विभक्त किया। यद्यपि वह कमल इतना बड़ा था कि उसके चौदह भुवनों या इनसे भी बड़े लोकों को बनाया जा सकता था। जो निष्काम कर्म के संपादक हैं, उन्हें महः, तपः जनः तथा सत्यलोक स्वरूप ब्रह्म लोक में रहना पड़ता है। इन चारों लोकों का सामूहिक नाम परमेष्ठी लोक या ब्रह्मलोक भी है।

पुनः उन्होंने स्थावर को लेकर देवपर्यन्त स ष्टि की रचना की, पर इससे भी स ष्टि का विकास नहीं हुआ और न उनके लक्ष्य की पूर्ति हुई। तब उन्होंने ध्यान कर देह स्वरूप भूतों से उत्पन्न इन्द्रियों सहित मानव प्रजा की स ष्टि की। वे ब्रह्मा के ही समान शक्ति-सम्पन्न तथा अध्यात्म के पण्डित थे। इन मानस पुत्रों को ब्रह्मा ही कहा गया। इनकी संख्या ६ है और इनके नाम हैं-भ गु, पुलस्त्य, पुलह्व, क्रतु, अङ्गिरस, मरीचि, दक्ष, अग्नि तथा वसिष्ठ। पुनः ख्याति भूति, सम्भूति, क्षमा, प्रीति, सन्नति, ऊर्ज्जा, अनुसूया तथा प्रसूति नामक नौ कन्यायें उन महात्माओं की पत्नी के रूप में उत्पन्न हुई और इनसे ही स ष्टि का विस्तार हुआ।

**मानसी स ष्टि** -ब्रह्मा की स ष्टि को मानसी स ष्टि कहते हैं। जीवों के पूर्व जन्म के कर्मों को जान कर ही ब्रह्मा उनकी उत्पत्ति करते हैं। ब्रह्मा का यह ज्ञान भगवत् प्रदत्त होता है और वे उसी के द्वारा उन कर्मो की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। ब्रह्मा की मानसी स ष्टि से मरीचि, कश्यप आदि अनेक अधिकारी पुरुषों का जन्म होता है और वे ब्रह्मा की प्रेरणा से उनके स ष्टि-कार्य में सहायता प्रदान करते हैं। प्रजापति कश्यप द्वारा देव-दैत्य पशु पक्षी तथा स्थावर-जंगम रूपी जन्तु उत्पन्न होते हैं। कश्यप का अर्थ देखने वाला है-कश्यपः पश्यको भवति। यहाँ देखने वाले का तात्पर्य अपनी स ष्टि से स ष्टि करने वाला है। जो वेद मूलक, अक्षय, अव्यय तथा धर्मानुकूल ब्रह्मा द्वारा निर्मित खण्ड हो, उसे मानसी स ष्टि कहते हैं।

**रौद्र स ष्टि** - ब्रह्मा जी ने जिन सनन्दन आदि चारों कुमारों को स ष्टि की व द्धि के लिए उत्पन्न किया था, वे स ष्टि कार्य से निरपेक्ष और उदास हो गये। वे सभी ज्ञान सम्पन्न विरक्त एवं मत्सरादि दोषों से परे थे। उनकी इस प्रकार की उदासीनता को देख कर अर्थात् संसार रचना के प्रति उनकी उदासीनता से ब्रह्मा को अत्यन्त क्रोध आया, जो त्रिलोक को भस्म करने वाला था। उस समय उनकी टेढ़ी भुकृटी तथा क्रोध-सन्तप्त ललाट से दोपहर के सूर्य के सद श देदीप्यमान रुद्र उत्पन्न हुए। उनका अति प्रचण्ड शरीर आधा नर था और आधा नारी का। ब्रह्मा के आदेश को प्राप्त कर रुद्र ने अपने शरीर को स्त्री तथा पुरुष के रूप में दो भागों में विभक्त किया। पुरुष भाग पुनः एकादश भागों में विभक्त हुआ तथा स्त्री भाग भी सौम्य, क्रूर, शान्त-अशान्त तथा श्याम और गौर आदि कई रूपों में विभक्त किया गया। रुद्र के द्वारा आर्विभूत इस स ष्टि को रौद्री स ष्टि के नाम से अभिहित किया गया।

पौराणिक स ष्टि-प्रक्रिया सांख्यदर्शन से प्रभावित होकर भी मौलिक है। सांख्य के अनुसार प्रकृति और पुरुष मूल तत्त्व माने गए हैं, पर पुराणों ने बताया है कि प्रणय काल में वे दोनों परमात्मा में ही विलीन हो जाते हैं। वह परमात्मा ही एक मात्र आधार और सबका अधीश्वर है, जिसे विष्णु कहते हैं।

**प्रतिसर्ग** - प्रतिसर्ग या प्रलय के लिए पुराणों में कई शब्द प्रयुक्त हुए हैं-अन्तरप्रलय, अन्तराला-उपसंह्रति, आमूत संप्लव, निरोध, संस्था, उपसंह्रति, तथा तत्त्वप्रतिसंयम आदि। प्रलय चार प्रकार के होते हैं-नैमित्तिक, प्राकृत, आत्यन्तिक एवं नित्य।

**नैमित्तिक प्रलय** - प्रलय के अवसर पर जब ब्रह्मा तथा शेषशायी विष्णु विश्व को आत्मलीन कर सो जाते हैं, तब उनके शयन को निमित्त मानकर ही प्रलय होता है। वह ब्रह्म के एक दिन व्यतीत होने पर होता है। ब्रह्मा के एक दिन को कल्प कहते हैं, जिसमें १४ मनुओं का समय व्यतीत हो जाता है। कल्प की समाप्ति के पश्चात् उतने ही समय तक प्रलय का कालमान होता है। इस प्रलय का अन्य नाम ब्राह्मीरात्रि भी है। इस समय तीनों लोकों-भूः, भुवः, स्वर-का ही प्रलय होता है और ऊपर के चार लोक-महः, जनः, तपः, सत्यम्-अपने निश्चित स्थान पर विद्यमान रहते हैं। इस प्रलय की स्थिति में ब्रह्मा सम्पूर्ण विश्व को अपने में समेट कर सो जाते हैं और शेषशायी विष्णु भी शयन कर जाते हैं। चूँकि इस प्रलय का निमित्त ब्रह्मा जी का पद शयन है, अतः इसे नैमित्तिक प्रलय कहते हं।

**एष नैमित्तिकी नाम मैत्रेय प्रतिसंचरः।**

**निमित्तं तत्र यच्छेते ब्रह्मरूपधरो हरिः।।**

**प्राकृतिक प्रलय** - ब्रह्मा की आयु के सौ वर्ष होने पर प्राकृतिक प्रलय होता है। इस स्थिति में सात प्रकृतियाँ, प च तन्मात्राएँ, अहंकार एवं महत्तत्त्व प्रकृति में लीन हो जाते हैं एवं संसार में भीषण संहार के द श्य परिलक्षित हो जाते हैं। इस प्रलय में कारण उपस्थित होने पर प चभूतों के मिश्रण से बना हुआ ब्रह्माण्ड अपना स्थूल रूप छोड़कर कारण रूप में घुल-मिल जाता है।

**द्विपरार्धे त्वतिक्रान्ते ब्रह्मणः परमेष्ठिनः।**

**तदा प्रकृतयः सप्त कल्पन्ते प्रलायाय वे।।**

**एष प्राकृतिकी राजन् प्रलयो यत्र जीयते।**

**आण्डकोश्स्तु सङ्घातो विघात उपसादिते।।**

**आत्यन्तिक प्रलय** - पूर्ववर्णित प्रलयों की भाँति इस प्रलय की कोई सीमा नहीं है यह कभी भी हो सकता है। इसके उदय की साधन-सामग्री जब कभी उपस्थित हो जाती है, तभी यह संभव होता है। भागवत में इसका स्वरूप इस प्रकार वर्णित है। "जब जीव विवेक के खड्ग से मायामय अहंकार का बंधन काट देता है, तब यह अपने एकरस आत्मस्वरूप के साक्षात्कार में स्थित हो जाता है। 'आत्मा' की यह माया मुक्त वास्तविक स्थिति ही आत्यन्तिक प्रलय कही जाती है।"

**तदैवमेतेन विवेकहेतिना,**

**मायामयाहङ्करणात्मबन्धनम्।**

**छित्त्वाच्युतात्मनुभवो वतिष्ठते**

**तमाहुरात्यन्तिकमङ्ग सम्प्लवम्।।**

**नित्य प्रलय** - ब्रह्मा से लेकर हर प्राणी एवं तिनके भी सभी जन्मते एवं मरते हैं और इस प्रकार स जन एवं संहार की लीला सदा चलती रहती है। जैसे आकाश में तारे हर समय चलते ही रहते हैं, परन्तु उनकी गति स्पष्ट रूप से नहीं दिखायी पड़ती, वैसे ही भगवान् के स्वरूप-भूत अनादि-अनन्त काल के कारण प्राणियों की प्रतिक्षण होने वाली उत्पत्ति और प्रलय का भी पता नहीं चलता।

**उत्पत्तिप्रलयावेके सूक्ष्मज्ञाः सम्प्रचक्षते।**

**कालस्त्रोतोजवेनाशु ह्रियमाणस्य नित्यदा।।**

**परिणामिनामवस्थाता जन्मप्रलय-हेतवः।**

**अनाद्यन्तवतानेन कालेनेश्वरमूर्तिना।।**

---- o -----